दिनांक 27 सितम्बर, 2018

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

वेदों में मंदिरों के आर्किटेक्ट का सटीक वर्णन है

- सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला का तीसरा दिन
- वेद में मंदिर के स्तंभ, हॉल, वृत्तों की सटीक गणितीय गणना-इतिहासकार डॉ रहमान अली
- "रविंद्रनाथ टैगोर कवि के साथ-साथ दार्शनिक, संगीतज्ञ और चित्रकार भी थे"- डॉ आशा मुखर्जी
- "टैगोर मानतावाद के समर्थक थे"

सांची बौद्ध दिवसीय कार्यशाला 5 भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित-"आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन" विषय पर तीसरे दिन कई गहन विषयों पर चिंतन किया गया। इतिहासकार और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य **डॉ रहमान अली** ने "भारतीय मंदिरों की वास्तुकला की उत्पत्ति और विकास" पर चर्चा करते हुए बताया कि वेदों में मंदिरों के प्लानउनके , के बारे में संपूर्ण वर्णन किया गया है। उनका कहना था कि (सौंदर्य)और उनकी सजावट (क्षितिज)एलिवेशन वेद में मंदिरों के स्तंभ, हॉलवृत्तों के बारे में इतना सटीक ज़िक्र किया गया है कि मानों को दैवीय ज् ,ञान के आधार पर उस दौर के मनुष्यों को मंदिर निर्माण सिखा रहा है।

डॉ रहमान अली ने देश के मंदिरों के चित्रों को प्रदर्शित कर बताया कि उनकी वास्तुकला और 32 निर्माण में किस प्रकार की समानताएं थीं।डॉ अली ने बताया कि इनके आर्किटेक्ट में एक सटीक गणितीय हिसाबज् ,यामीति और तर्क दिखाई पड़ता है। उनका कहना था कि नींव से शिखर तक एकएक इंच का - नाप वर्णित किया गया है।ये सब विष्णु धर्मोत्तर पुराण में लिखा है। उन्होंने नागर शैली में निर्मित किए गए मंदिरों के चित्र प्रदर्शित कर बताया कि ऐसे भूमिष मंदिरों की सजावट के लिए चारों दिशाओं में शिव परिवार के सदस्यों के चित्र होते हैं। शिखर की तुलना कैलाश पर्वत के रूप में की जाती है।

कार्यशाला के तीसरे दिवस शांतिनिकेतन की डॉ आशा मुखर्जी ने नोबल पुरस्कार विजेता गुरु रविंद्रनाथ टैगोर की धर्म की अवधारणा को प्रस्तुत किया। डॉ मुखर्जी ने बताया कि टैगोर ने अपनी किताब Religion of Man में **मानवतावाद** के दर्शन को प्रस्तुत किया। उनके अनुसार टैगोर ने जिस **मानवतावाद** को अपनी इस पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत किया है वो अद्वैत वेदांत दर्शन के करीब है। टैगोर कहते थे -"जैसी ही मैं ईश्वर से अलग हुआमैं ईश्वर की आराधना के लिए स्वतंत्र हो गया ,"। डॉ आशा ने बताया कि यह स्वामी विवेकानंद भी टैगोर के इस कथन से प्रभावित थे। विवेकानंद ने भी इसी मानवतावाद के दर्शन को प्रस्तुत किया है। स्वामी विवेकानंद कहते थे किमैं उस प्रभु का सेवक हूं जिसे - अज्ञानी लोग मनुष्य कहते हैं। डॉ आशा मुखर्जी के अनुसार सर्वप्रथम रविंद्रनाथ टैगोर ने ही"साधना" शब्द का प्रयोग किया था और वेदांत के माध्यम से तात्कालिक सामाजिक हल को प्रस्तुत किया था।

डॉ आशा मुखर्ज़ी के अनुसार लोग गुरु रविंद्रनाथ टैगोर को मात्र एक महान कवि ही मानते हैं जबकि वो एक कवि के साथसंगीतज्ञ थे और एक चित्रकार भी थे। टैगोर की अवधारणा ,साथ दार्शनिक थे- थी कि भारत में भारतीय दर्शन परिषद नामक एक केंद्रीय संस्था हो जो कि समस्त भारतीयदर्शन के क्षेत्र में कार्य करे और उसे संकलित करने का कार्य करे। टैगोर के रहते तो यह संभव नहीं हो सका लेकिन बाद में इसी अवधारणा पर ICPR भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद का गठन किया गया। हालांकि रविंद्रनाथ टैगोर को Indian Philosophical Congress का पहला अध्यक्ष बनाया गया था। डॉ आशा मुखर्जी केअनुसार रविंद्रनाथ टैगोर ने दर्शन शास्त्र में प्रायोगिक प्रमाण पर कार्य किया था और वे मानती हैं कि उनका प्रयास सर्वकालिक और सार्वभौमिक है। टैगोर की सभी कृतियां कुरुक्षेत्र में कृष्ण और अर्जुन के संवाद पर आधारित थीं।

डॉ आशा मुखर्जी का कहना था कि देश के अंग्रेज़ी औपनिवेशवादी काल में संस्कृत भाषा पर भी विदेशी भाषाओं का दबाव रहा और मैक्स म्यूलर तथा कीथ जैसे यूरोपीय लेखकों ने अपनी भाषाओं में इनके अपने अर्थों में अनुवाद किए। उनका कहना था कि संस्कृत की समझ के बिना भारतीय दर्शन को नहीं समझा जा सकता।

इसी सत्र में प्रोपनीरसेलवम ने आधुनिक भारतीय विचार के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत .एस . वीं शताब्दी के समसामायिक भारतीय दर्शन को उल्लेखित किया। डॉ पनीरसेलवम ने 20 किया। उन्होंने सी भट.के ,रविंद्रनाथ टैगोर ,के सच्चिदानंद मूर्ति ,महात्मा गांधी्टाचार्यपी .प्रो डी ,दया कृष्णन .प्रो , चटोपाध्याय के द्वारा व्याख्यायित किए गए भारतीय दर्शन से लोगों को वाकिफ कराया। उन्होंने कहा कि समय बेहद तेज़ी से गति कर रहा है और इसी प्रकार से दर्शन भी प्रतिदिन बदल रहा है। उनका कहना था कि वर्तमान समय के अनुसार ही भारतीय दार्शिनों द्वारा प्रस्तुत किए गए दर्शनों को परखा जाना चाहिए।

तीसरे दिन दूसरे सत्र में प्रोगोदावरेश मिश्र ने गौतम बुद्ध को लेकर शंकराचार्य के मतों को प्रस्तुत . मिश्रा का कहना था कि बुद्ध ने यद्यपि वैदिक परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण किया लेकिन .किया। प्रोइसे प्रदर्शित नहीं किया और यही उनके बाद आने वाले बौद्ध दार्शनिकों ने किया। इससे भारतीय दर्शन को स्वभाविक नुकसान हुआ।

इसी सत्र के दौरान डॉ मीनल कतरनिकर ने यथार्थज्ञान तथा चेतना के विषय पर कहा कि , भारतीय परंपरा में इसके तीन आयाम हैं। डॉ मीनल ने जैन दर्शन कें अनेकांतवादी सिद्धांत और उसकी ज्ञान मीमांसा का अन्य भारतीय दर्शन जैसे न्याय तथा बौद्ध दर्शन के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

5 - DAY WORKSHOP ON
WRITING INDIAN PHILOSOPHY IN MODERN PERSP
.....Let's Explore Indian Wisdom

.....Let's Explore Indian Wisdom
29 September, 2018
Dr. Rahman Ali

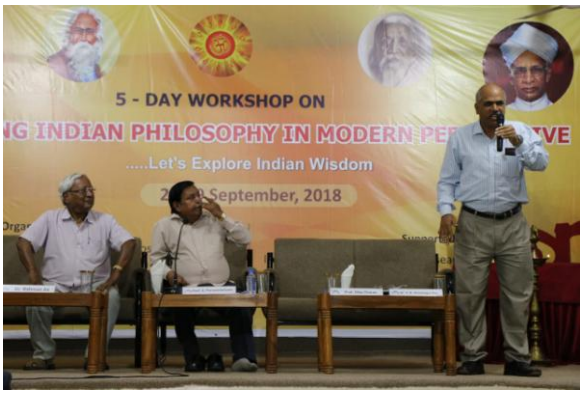
5 - DAY WORKSHOP ON
.....Let's Explore Indian Wisdom

WORKSHOP ON
OPHY IN MODERN PERSPECTIVE

Sanchi
ersity